

**शून्यपाल** पुं. (तत्.) 1. स्थानापन्न व्यक्ति 2. जिसकी तैनाती रिक्त पद वाले कार्य को संभालने के लिए की जाय 2. प्रतिशासक, प्रतिनिधिशायक।

**शून्यबहरी** स्त्री. (तत्.) एक रोग जिसमें शरीर का कोई भाग संवेदन रहित हो जाए।

**शून्य बिंदु** पुं. (तत्.) 1. शून्य संख्या का प्रतीक, चिह्न।

**शून्य मंडल** पुं. (तत्.) योग. में सहस्रार चक्र का एक नाम।

**शून्य मध्य** वि. (तत्.) 1. जिसके मध्य में शून्य या अवकाश हो 2. पोला, खोखला पुं. बांस, नरकुल।

**शून्यमनस्क** वि. (तत्.) अन्यमनस्क, भुलक्कड़, अनमना, भग्नचेता, जिसका मन कहीं और हो।

**शून्यमूल** पुं. (तत्.) 1. प्राचीन भारत में सेना की एक प्रकार की व्यूह रचना 2. जिस सेना का वह केन्द्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते रहे हो।

**शून्यरूपिम** पुं. (तत्.) 1. किसी शब्द का एक वचन और बहुवचन में अपरिवर्तित रूप 2. जो अक्षर तो विद्यमान रहे परंतु उच्चरित न हो।

**शून्यलागत** स्त्री. (तत्.) किसी व्यापार अथवा कारोबार की वह व्यवस्था जिसके निष्पादन में कोई व्यय निहित न हो वि. इक्विटी, उत्पादों आदि में इसका उपयोग किया जाता है।

**शून्यवाद** पुं. (तत्.) 1. बौद्धों की महायान शाखा के माध्यमिक नामक विभाग का मत या सिद्धांत जिसमें संसार को शून्य और सभी पदार्थों को सत्ताहीन माना जाता है 2. वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदि की सत्ता स्वीकार नहीं करता 3. बौद्ध दर्शन, नास्तिकता।

**शून्यवादी** पुं. (तत्.) 1. शून्यवाद का अनुयायी, शून्यवाद को मानने वाला 2. बौद्ध 3. नास्तिक।

**शून्य समाधि** स्त्री. (तत्.) स्मारक किसी व्यक्ति के सम्मान में बनाई गई समाधि परंतु स्वयं

उसका शरीर उस समाधि के अंदर न दफनाया गया हो।

**शून्यहृदय** वि. (तत्.) 1. हृदयहीन 2. अनवधान।

**शून्यालय** पुं. (तत्.) 1. एकांत स्थान, निर्जन स्थान 2. सुनसान कमरा, सूनाघर, निर्जन घर।

**शून्यावस्था** स्त्री. (तत्.) नाथ पंथ के अनुसार आत्मा की वह अवस्था जब वह शून्य चक्र या सहस्रार में पहुँच कर सब द्वंद्वों से मुक्त हो जाती है जहाँ पहुँच कर आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है।

**शून्याशून्य** पुं. (तत्.) 1. जीवन्मुक्ति की स्थिति 2. शून्य और अशून्य।

**शून्यिका** स्त्री. (तत्.) 1. रिक्त, परिशून्य, शून्य, शून्य स्थान।

**शूर** वि. (तत्.) 1. वीर, बहादुर, युद्ध-कुशल, सिपाही, योद्धा, पराक्रमी, सूरमा, शौर्य शाली, शक्ति-संपन्न पुं. वीर व्यक्ति, योद्धा, 2. सूर्य, विष्णु 3. सिंह, शेर, चीता 4. (समास युक्त शब्द के अंत में) जैसे- दान-शूर 5. एक समवर्णिक छंद 6. सूर 7. साल का पेड़ 8. कृष्ण के पितामह 9. चित्रक वृक्ष, साखू का पेड़ 10. मदार का पेड़ अर्क, बड़हर, आक 11. लिक्च 12. मसूर।

**शूरता** स्त्री. (तद्.) वीरता, शूरत्व, बहादुरी।

**शूरताई** स्त्री. (तद्.) शूरता।

**शूरत्व** पुं. (तत्.) शूरता, शूरत्व, वीरता, शूर होने का भाव।

**शूरन** पुं. (तत्.) एक जमीकंद, शूरण, ओल, श्योनाक, शोणाक का पेड़।

**शूरमन्य** वि. (तद्.) दे. शूरम्मन्य, शूरमानी।

**शूरमानी** पुं. (तद्.) अपनी शूरवीरता का अभिमान करने वाला व्यक्ति, अपनी वीरता पर घमंड करने वाला।

**शूरम्मन्य** वि. (तत्.) जो अपनी वीरता के बारे में बढ़-चढ़ कर बोलता हो परंतु वास्तव में उतना वीर न हो, शूरमानी।